दूसरों को सशक्त बनाना

प्रशान्त मिश्रा

हम सभी समाज और राष्ट्र के प्रति अपने अधिकारों और ज़िम्मेदारियों से अवगत, क़ानून का पालन करने वाले ईमानदार नागरिक हो सकते हैं। लेकिन अच्छे नागरिक होने के नाते यह ज़रूरी है कि हम समाज में जिन तरीक़ों से भी योगदान कर सकते हों, करें। मैंने कुछ ऐसा ही करने का फ़ैसला किया।

जिस मूल दर्शन के साथ मैंने *केयरीच प्रोजेक्ट* शुरू किया था, वह उन लोगों की देखभाल करना और उन लोगों तक पहुँचना था जिन्हें मदद की ज़रूरत है। और यह मदद इस तरीक़े से हो कि उन्हें अपने जीवन के लम्बे समय के लिए, आदर्श रूप से, आजीवन फ़ायदा हो। दुनिया में सबसे ज़्यादा बच्चों की आबादी भारत में है। 95 प्रतिशत बच्चे प्राथमिक विद्यालय जाते हैं और दस में से केवल एक ही बच्चा स्नातक डिग्री प्राप्त कर पाता है।[1] समस्या की गम्भीरता को समझते हुए मैं इस सामाजिक अभियान पर कार्य करने के लिए प्रोत्साहित हुआ। जैसा कि नेल्सन मंडेला ने एक बार कहा था, "शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है जिसका उपयोग आप दुनिया को बदलने के लिए कर सकते हैं।"

मैंने शुरुआत कैसे की

पहला काम लाभार्थियों का पता लगाना था। अपने शोध और अपने माता-पिता के सुझावों के आधार पर मैंने यह निर्णय लिया कि मैं एक सरकारी स्कूल के साथ काम करूँ। कुडलू राजकीय विद्यालय, बेंगलूरु की जनरल बॉडी के साथ हुई बैठकों के बाद प्रबन्धन ने इस परियोजना को मंजूरी दे दी।

सभी हितधारकों (अभिभावकों, विद्यार्थियों और विद्यालय प्रशासन) की रुचियों के बीच तालमेल बिठाने के लिए मैंने लगभग 145 साक्षात्कार किए और पाया कि विद्यार्थी अँग्रेज़ी, गणित और खेल में रुचि रखते हैं। बहुत-से विद्यार्थी सह-पाठ्यचर्या गतिविधियों में भी रुचि रखते थे, जो मेरे हिसाब से टेलीविज़न और अन्य मीडिया से जुड़ने के कारण हो सकता है। लेकिन शैक्षणिक दृष्टिकोण से अँग्रेज़ी सबसे अधिक रुचिकर विषय के रूप में सामने आई और इसलिए मैंने पाँचवीं कक्षा के विद्यार्थियों को 'स्पोकेन इंग्लिश' पढ़ाने का फ़ैसला किया (सरकारी स्कूलों में अँग्रेज़ी विषय पढ़ाने की शुरुआत पाँचवीं कक्षा से होती है)।

स्कूल प्रशासन भी स्कूल में कुछ विकास कार्य करवाने के लिए उत्सुक था। इसके लिए कुछ धन की आवश्यकता थी और मुझे वित्तीय संसाधन जुटाने में कुछ समय लगा, लेकिन अन्ततः मैं संसाधन जुटाने में सफल रहा। सूची में निम्नलिखित चीज़ें शामिल थीं :

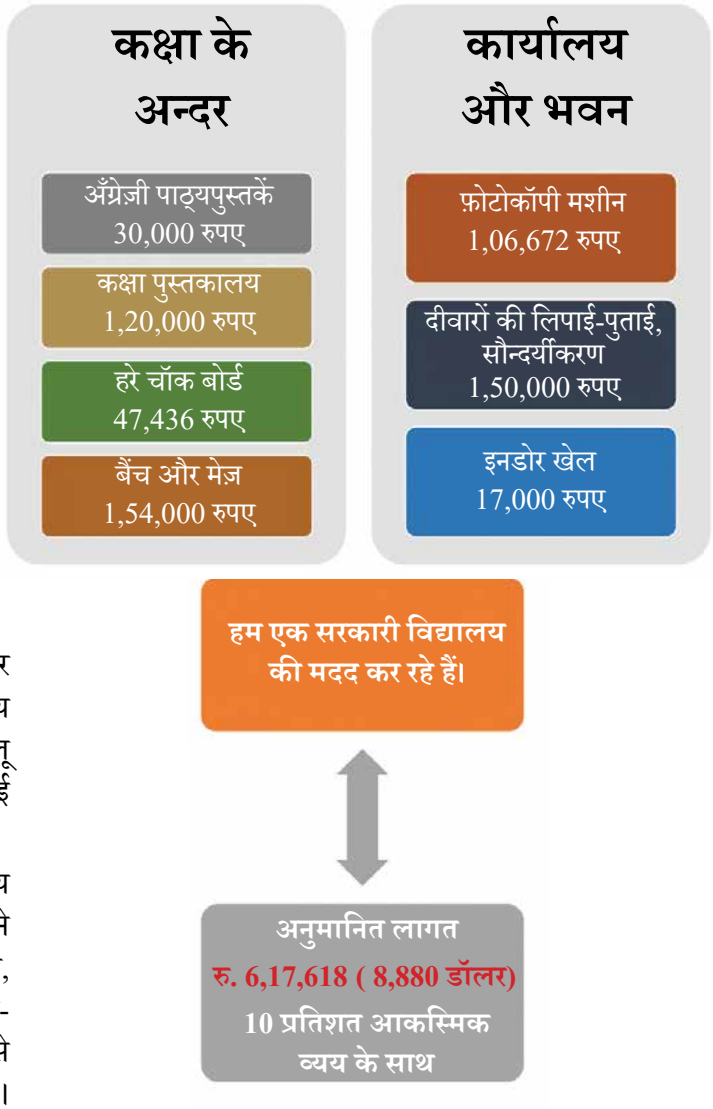

अब तक की प्रगति

1. कक्षा पाँचवीं और छठवीं के 54 विद्यार्थियों के एक समूह को स्पोकेन इंग्लिश सिखाई जा रही है।
2. एक क्राउड-फंडिंग प्लेटफॉर्म Careach.in चालू है, जो फेसबुक, ट्विटर और इंस्टाग्राम पर भी मौजूद है। हमने

घर-घर जाकर भी प्रचार किया।

3. हमने सत्रों के लिए संवादात्मक सामग्री तैयार की और अब तक हम 45 सत्र आयोजित कर चुके हैं।
4. हमने अपनी वित्तीय ज़रूरत का लगभग 50 प्रतिशत पहले ही एकत्र कर लिया है जिसका उपयोग प्रिंटर, हरे चॉकबोर्ड और कुछ इनडोर खेल सामग्री ख़रीदने के लिए किया गया है।

मैं धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था लेकिन तभी *कोविड–19* ने कार्य को एकदम से रोक दिया। और जैसे-जैसे चीज़ें आगे बढ़ीं यह स्पष्ट हो गया कि अभिभावक और बच्चे निश्चित रूप से कठिनाइयों से गुज़र रहे थे। इसलिए मैंने कार्य के तरीक़े बदले और विद्यार्थी परिवारों की हरसम्भव मदद करने का फ़ैसला किया। स्कूल के प्रधानाचार्य के साथ मेरी बैठक में यह बात सामने आई कि सबसे अच्छा होगा अगर हम अगस्त से नवम्बर, 2020 के बीच 30 ज़रूरतमन्द परिवारों को भोजन और दैनिक आपूर्ति में मदद कर सकें। स्कूल प्रधानाचार्य के परामर्श से लाभार्थियों की एक सूची बनाई गई। घर-घर जाकर और ऑनलाइन माध्यम से व्यापक रूप में दान माँगा गया और इससे मुझे इन परिवारों की मदद के लिए नियमित रूप से धन प्राप्त होता रहा।

आगे का काम

अन्य योजनाबद्ध गतिविधियों के अलावा स्कूल को अतिरिक्त शौचालय सुविधाओं की ज़रूरत है। मदद के लिए मेरी तलाश जारी है और मैं कुछ कॉरपोरेट/सीएसआर फंडिंग की तलाश कर रहा हूँ। अनुमानित लागत दस लाख रुपए है और मुझे यक़ीन है कि अन्ततः हम इसे इकट्ठा कर लेंगे। लेकिन अभी के लिए तो केवल स्पोकेन इंग्लिश पढ़ाना और बुनियादी ढाँचे में मामूली सुधार लाने में मदद करने का मेरा काम जारी है।

हाल ही में, मैंने इस विद्यालय को हाई-स्पीड इंटरनेट कनेक्शन दिलाने में भी मदद की।

लोकतांत्रिक राष्ट्रों के नागरिकों के रूप में प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि वह सभी लोगों के जीवन को बेहतर बनाने में मदद करे। आसान काम करने का चुनाव करने के बजाय हमें ऐसे क़दम उठाने चाहिए जो न्यायसंगत हों। हमें बिना शर्त समानता की दिशा में काम करने की ज़रूरत है और अपने समाज को अप्रासंगिक कारकों, जैसे कि धन, लिंग, जाति, धर्म आदि के आधार पर वर्गीकृत नहीं करना चाहिए। स्पष्ट है कि ऐसा होने में समय लगेगा, लेकिन कम से कम हम जितना कर सकते हैं, उतना तो करें। मैं जो कर सकता हूँ, वह करने की कोशिश कर रहा हूँ।

कुल 145 हितधारकों से मुलाक़ात = 124 विद्यार्थी || 11 शिक्षक || 10 अभिभावक

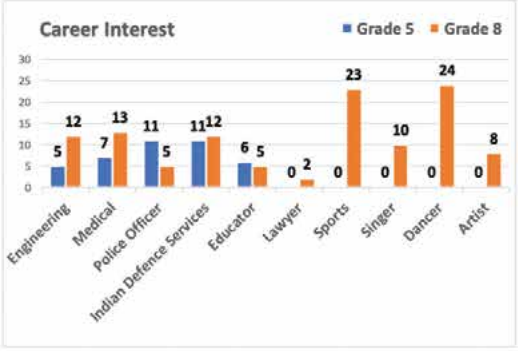

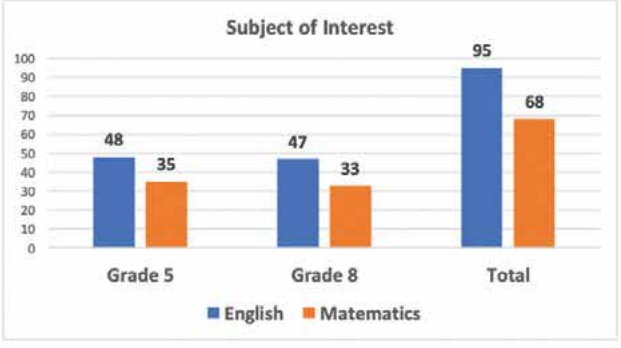

i https://www.cry.org/resources/pdf/Types_of_Corp_parts_sep11.pdf

References

https://www.worldbank.org/en/news/feature/2011/09/20/education-in-india

https://www.ncee.org/wp-content/uploads/2013/10/India-Education-Report.pdf

प्रशान्त मिश्रा द इंटरनेशनल स्कूल, बेंगलूरु (TISB) में ग्यारहवीं कक्षा के छात्र हैं। उनके पसन्दीदा विषय अर्थशास्त्र और गणित हैं। उन्हें उन क्षेत्रों की खोजबीन करने में भी आनन्द आता है जो तकनीकी विकास को उनके आर्थिक प्रभावों के साथ जोड़ते हैं। वे कॉलेज में अर्थशास्त्र की पढ़ाई करना चाहते हैं। उनसे mprashant@tisb.ac.in पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** सात्विका ओहरी